भारतीय अर्थव्यवस्थापर नया आक्रमण ?

हलाल जिहाद ?

ग्रन्थकी भूमिका

'सुखस्य मूलं धर्मः । धर्मस्य मूलमर्थः ।' (चाणक्यनीतिसूत्र, अध्याय १), अर्थात 'सुखका मूल धर्म एवं धर्म का मूल अर्थ है ।' इस प्रकार सुख और धर्म की दृष्टिसे 'अर्थ'का महत्त्व बताया गया है । धर्मशास्त्रानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चार पुरुषार्थोंमें भी अर्थ समाविष्ट किया गया है । आज हम देखते हैं कि आर्थिक रूपसे सम्पन्न व्यक्ति प्रभावशाली होता है । ऐसा व्यक्ति राजनीतिसे लेकर देशकी नीतितक को प्रभावित कर सकता है । आर्थिक दृष्टिसे सम्पन्न होनेके कारण ही अमेरिका, इंग्लैंड आदि देश विकसित कहलाते हैं । ये देश संसारके अनेक देशोंके सन्दर्भमें दबावतन्त्रका उपयोग करते हैं ! इसीलिए आर्थिक नीतिका बडा महत्त्व है; परन्तु यही आर्थिक सत्ता यदि संसारका विनाश करनेको तैयार जिहादियोंके हाथ में चली जाए, तो... ? वर्तमानमें इस भयका मुख्य कारण है, संसारमें सर्वाधिक तीव्र गतिसे बढ रही इस्लामी शरीयतपर आधारित 'हलाल अर्थव्यवस्था !'

शरीयत आधारित 'इस्लामिक बैंक'का अनेक देशोंने विरोध किया; परन्तु ग्राहक अधिकारोंके कारण तथा कट्टर धर्मपालनके आग्रहवश 'हलाल अर्थव्यवस्था' आज फलती-फूलती दिखाई दे रही है । मुसलमान प्रत्येक पदार्थ और वस्तु इस्लाम अनुसार वैध अर्थात 'हलाल' हो, इसकी मांग कर रहे हैं । इसके लिए 'हलाल सर्टिफिकेट' अनिवार्य हो गया । अचरजकी बात तो यह है कि 'सेक्युलर' भारतके सरकारी प्रतिष्ठानोंमें भी 'हलाल' अनिवार्य किया गया है । देशके केवल १५ प्रतिशत अल्पसंख्यक मुसलमान समाजको इस्लाम अनुसार 'हलाल' मांसका भक्षण करना है, इसलिए शेष जनतापर भी उसे थोपा जा रहा है । आज यह 'हलाल सर्टिफिकेट' केवल मांसतक सीमित नहीं है ।

खाद्यपदार्थ, सौन्दर्य प्रसाधन, औषधियां, चिकित्सालय, गृहनिर्माण संस्था, मॉल, पर्यटन आदि क्षेत्रोंमें भी यह आरम्भ हो चुका है । इस्लामी देशोंमें निर्यात करनेवालोंके लिए तो 'हलाल सर्टिफिकेट' अनिवार्य ही हो गया है । आज 'मैकडोनाल्ड' जैसे विदेशी प्रतिष्ठान हिन्दूबहुल भारतमें १०० प्रतिशत 'हलाल' पदार्थ बेचकर हिन्दू ग्राहकोंके धार्मिक अधिकारोंका अपमान कर रहे हैं ! इस 'हलाल अर्थव्यवस्था'ने पूरे विश्वमें दबदबा निर्माण किया है और अल्पावधि में २ ट्रिलियन अमेरिकी डॉलरका चरण भी पा लिया है ।

पूरे संसारमें आज 'हलाल अर्थव्यवस्था'का सार्वजनिक रूपसे और बडी मात्रामें विरोध किया जा रहा है । ऑस्ट्रेलियाकी संसदमें बढते कट्टरतावादको 'हलाल अर्थव्यवस्था' बल प्रदान कर रही है, उसपर प्रतिबंध लगानेकी मांग भी की है ।

जब पन्थपर आधारित समानान्तर व्यवस्था निर्माण हो जाती है, तब देशकी विभिन्न संस्थाओंपर उसका निश्चित प्रभाव पडता है । यहां तो 'शरीयत'पर आधारित एक अर्थव्यवस्था निर्माण हो रही है । इसलिए उसका 'सेक्युलर' भारतपर भी निश्चित प्रभाव पडेगा । इस दृष्टिसे 'भविष्यमें स्थानीय व्यापारियों, परम्परागत उद्योगपतियों तथा अन्ततः राष्ट्रपर क्या संकट आ सकते हैं ?', इसका विचार करना आवश्यक है । ऐसी स्थितिमें भारतको समय रहते ही सावधान हो जाना चाहिए ! भारत सरकारको इसकी गहन जांच करनी चाहिए कि 'हलाल सर्टिफिकेट' देनेवाली इस्लामी संस्थाएं 'सर्टिफिकेट' देनेके माध्यमसे प्राप्त धनका उपयोग कैसे करती हैं ?' 'सेक्युलर' भारतमें 'भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण' (FSSAI) जैसी सरकारी व्यवस्था होते हुए भी 'हलाल सर्टिफिकेट' देनेवाली इस्लामी संस्थाओंकी क्या आवश्यकता है ?

इस पृष्ठभूमिपर यह ग्रन्थ किसी समाजकी धार्मिक श्रद्धाके विषयमें अथवा उनके धार्मिक अधिकारोंके विषयमें प्रश्न करनेके लिए अथवा उनका अपमान करनेके लिए नहीं; अपितु भारतके १०० करोड हिन्दू ग्राहकोंके अधिकारोंका

सम्मान करनेके लिए, उन्हें उनके ग्राहक अधिकारों का भान दिलानेके लिए तथा राष्ट्रके सामने आसन्न एक संकटकी जानकारी देनेके लिए संकलित किया गया है ! 'यह ग्रन्थ पढकर हिन्दू ग्राहक जागृत हों', यही भगवान श्रीकृष्णके चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

१. 'हलाल'का अर्थ क्या है ? ७

२. 'हलाल' अभियानका उद्देश्य १३

३. 'हलाल' संकल्पनाकी वृद्धिका इतिहास १४

४. 'हलाल अर्थव्यवस्था' : स्वरूप, विस्तार एवं प्रचार १७

५. 'हलाल अर्थव्यवस्था'का आर्थिक आधार 'हलाल प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट)' ३५

६. 'हलाल प्रमाणपत्र'की निरर्थकता ! ४२

७. 'हलाल अर्थव्यवस्था'के दुष्परिणाम ४८

८. 'हलाल अर्थव्यवस्था' एवं 'जिहादी आतंकवाद' का सम्बन्ध ! ५१

९. 'हलाल अर्थव्यवस्था'के सन्दर्भमें हिन्दुओंकी उचित भूमिका और आचरण ! ५८

१०. 'हलाल अर्थव्यवस्था'का देश-विदेशमें हो विरोध ६८

११. 'हलाल अर्थव्यवस्था'के विरुद्ध 'हिन्दू जनजागृति समिति'का संघर्ष एवं सफलता ! ७६

१२. 'हलाल'द्वारा चलाए जा रहे 'आर्थिक जिहाद'के विरोधमें लडिए ! ८३